

विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प

नई दिल्ली। साल के जाते-जाते देशभर के विज्ञान संचारकों ने संकल्प लिया कि विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। 21 और 22 दिसंबर को नई दिल्ली स्थित भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) में 17वीं इंडियन साइंस कम्युनिकेशन कांग्रेस (आईएससीसी) में देश भर के विज्ञान संचारकों का जमावड़ा हुआ। जिसमें वैज्ञानिकों, शिक्षकों, पत्रकारों, विज्ञान लेखकों व छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

प्रमुख रूप से भारतीय विज्ञान लेखक संघ (इसवा) की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में एक बात साफ तौर पर उभर कर आई कि भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाना जरूरी है। उल्लेखनीय है कि इंडियन साइंस राइटर्स एसोसिएशन (इसवा) विगत 17 वर्षों से लगातार आम लोगों के बीच विज्ञान संचार को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम उद्घाटन सत्र में ही देश

● **भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए विज्ञान को आम लोगों तक पहुंचाना होगा : प्रो. पटैरिया**

● **मीडिया और विज्ञान को कंधे से कंधा मिलाकर काम करना होगा: केजी सुरेश**

के प्रख्यात विज्ञान संचारक और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्युनिकेशन एंड इनफारमेशन रिसोर्सिज (निसकेयर) के निदेशक डॉ. मनोज पटैरिया ने ऐसा ही आह्वान किया। उन्होंने कहा कि दुनिया आज एक ऐसे जहाज पर सवार है जिसमें तमाम सुविधाएं हैं, संसाधन हैं लेकिन यह जहाज दिशाहीन है। ऐसे में भारत ही इस जहाज को सही दिशा में ले जा

सकता है। उन्होंने कहा कि आज सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि विज्ञान सहज और सरल भाषा में आम लोगों तक पहुंचे। वैज्ञानिकों और विज्ञान संचारकों के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती है। दोनों को मिलकर आपसी सामंजस्य बनाकर यह काम करना होगा। विज्ञान संचार में सरकारी संस्थान भी अकेले बहुत कुछ नहीं कर सकते। इसमें मीडिया जगत के लोगों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। इस अवसर पर बोलते हुए आईआईएमसी के महानिदेशक और प्रख्यात पत्रकार केजी सुरेश ने कहा कि वर्तमान समय में मीडिया और विज्ञान को कंधे से कंधा मिलाकर चलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान और विज्ञान का भंडार है। जरूरत उस ज्ञान-विज्ञान को लोगों के सामने लाने की है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि नीम और हल्दी के गुणों पर विदेशियों ने पेटेंट कराने की कोशिश की जबकि हम भारतीय



सैकड़ों वर्षों से इनका प्रयोग करते रहे हैं। उन्होंने कहा कि विज्ञान का संचार तभी प्रभावी होगा जब वह लोगों को समझ में आने वाली भाषा में हो।

एकेडमी आफ साइंटिफिक एंड इन्वेस्टिव रिसर्च के निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह सांगवान ने विज्ञान संचारकों के प्रशिक्षण पर बल दिया।

इंडियन साइंस कम्युनिकेशन सोसाइटी की ओर से बोलते हुए डॉ. वीपी सिंह ने कहा कि हमारी संस्कृति में पारंपरिक ढंग से विज्ञान संचार होता रहा है।

उन्होंने कठपुतली जैसे लोक माध्यमों से विज्ञान संचार को प्रभावी बनाने पर जोर दिया। दो दिन तक चली भारतीय विज्ञान संचार कांग्रेस में कई सत्र आयोजित किए गए। शिक्षकों और छात्रों की ओर से विभिन्न विषयों पर रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए गए। इस दौरान 'इसवा' की वार्षिक सभा में विज्ञान संचार और संस्था प्रसार की रणनीति पर चर्चा हुई। कार्यक्रम में जादूगर अशोक यादव ने अपने शो के माध्यम से मनोरंजन के साथ साथ इसके पीछे छिपे विज्ञान को समझाया। वहीं लोक माध्यमों से विज्ञान संचार के तहत पुतल विशेषज्ञ मिठाईलाल ने 'पपेट शो' में वैज्ञानिक जागरूता संबंधी कई प्रस्तुतियां दीं। जिनमें उनके साथ इशितयाक अली, डॉ. विकास मिश्रा ने अहम भूमिका निभायी। कार्यक्रम के सफल संचालन में आरएस यादव, प्रमिला मजूमदार, डॉ. सीएम नौटियाल, तारिक बूदर, रवि अग्रवाल, तरुण जैन ने अहम भूमिका निभायी।

आर्थिक वृद्धि दर अगले साल हो सकती है सात प्रतिशत : एसोचैम

नई दिल्ली। उद्योग एवं वाणिज्य संगठन एसोचैम के अनुसार भारत की आर्थिक वृद्धि दर अगले साल सात प्रतिशत हो सकती है। एसोचैम ने नववर्ष पूर्व के परिदृश्य में आज कहा कि 2019 में आम चुनाव के पहले सरकारी नीतियों का झुकाव संकटग्रस्त ग्रामीण क्षेत्र की ओर हो रहा है। उसने कहा, वित्त वर्ष 2017-18 की दूसरी तिमाही में जीडीपी की वृद्धि दर 6.3 प्रतिशत रही है। इसके मुकाबले अगले वित्त वर्ष की सितंबर में समाप्त होने वाली तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर सात प्रतिशत हो सकती है। मानसून के महत्वपूर्ण होने के कारण अगले वर्ष में महंगाई चार से 4.5 प्रतिशत के बीच रह सकती है। संगठन ने कहा कि अगले साल के लिए सात प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर का उसका अनुमान सरकारी नीतियों में स्थिरता, अच्छे मानसून, औद्योगिक गतिविधियों में तेजी, ऋण वृद्धि और स्थिर विदेशी मुद्रा विनिमय दर की आशा पर आधारित है।